चीनी सभ्यता : राजनीति, समाज, विज्ञान एवं तकनीक

[CHINESE CIVILIZATION : POLITY, SOCIETY, SCIENCE AND TECHNOLOGY]

चीनी सभ्यता—उद्भव एवं विकास

(CHINESE CIVILIZATION : EMERGENCE AND DEVELOPMENT)

चीन की सभ्यता संसार की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। चीन की सभ्यता की एक बड़ी विशेषता यह रही है कि वह विश्व में एकमात्र ही आरम्भ से आज तक निरन्तर रूप से चली आने वाली सभ्यता है। यहाँ की मुख्य भाषा चीनी है, जिसका पारम्परिक और आधुनिक स्वरूप दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है। चीनी भाषा विश्व की सबसे पुरानी लिखित भाषाओं में से एक है। चीनी सभ्यता के बारे में कहा जाता है कि मिस्र, सुमेरिया, यूनान, बेबीलोन एवं यूनान की तरह अनेक जातियाँ और नस्लों के लोगों की नहीं बल्कि एक ही जाति के लोगों की सभ्यता है। प्राचीन चीनी लोगों ने अपने देश को तंगजेन, हन-जेन, मध्य-राज एवं अधोस्थित राज आदि नामों से निर्दिष्ट किया। ऐसा कहा जाता है कि आधुनिक 'चीन' शब्द का मूल 'चिन' (Qin) राजवंश से निकला है। 'चिन' राजवंश के पहले सम्राट चिन शी हुआंग (260-210 ई. पू.) थे। चीन में सर्वप्रथम मानव बस्तियों के साक्ष्य 5000 ई. पू. के आस-पास पाये गये। इन बस्तियों के अवशेष हुआंग हो बेसिन में पाये गये हैं। वर्तमान में चीन संसार के विशाल और महत्वपूर्ण देशों में से एक है। विश्व के अन्य राष्ट्रों के समान चीन भी अपने उद्भव एवं विकास के दौरान आदिम समाज, दास समाज एवं सामन्ती समाज के काल से गुजरा था। ऐतिहासिक विकास के लम्बे दौर में चीन की परिश्रमी, बुद्धिमान एवं साहसी जनता ने अपने संयुक्त प्रयासों से एक वैभवशाली संस्कृति का सृजन किया और समूची मानव जाति के लिए सम्पूर्ण रूप से योगदान दिया।

चीन की भौगोलिक अवस्थिति

(GEOGRAPHICAL LOCATION OF CHINA)

चीन का परिदृश्य विशाल एवं विविध है। चीन एशिया महाद्वीप के पूर्व में स्थित है। चीन जिसका पूर्ण नाम 'चीनी जनवादी गणराज्य' (People Republic of China) है, इसकी राजधानी 'बीजिंग' (Beijing) है। यह विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है और 9,595,960 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के साथ यह रूस, कनाडा एवं अमेरिका के बाद विश्व का चौथा सबसे बड़ा क्षेत्रफल वाला देश है। चीन के उत्तर में मंगोलिया, रूस, दक्षिण में विशाल हिमालय, भारत, नेपाल, म्यांमार, पाकिस्तान और अफगानिस्तान एवं चीन के पूर्व में प्रशान्त महासागर और कोरिया तथा पश्चिम में विस्तृत मरुस्थल है। देश का अधिकांश भाग पहाड़ी है। इसकी मुख्य पर्वत श्रृंखलाएँ तिएन शान, कुनलुन श्रृंखला व ट्रांस हिमालय है। हिमालय, काराकोरम, पामीर एवं तिएन शान पर्वत श्रृंखला चीन को दक्षिण और मध्य एशिया से अलग करती है। अतः चीनी सभ्यता का अपने मौलिक रूपों का विकास इन्हीं पर्वतों, मरुस्थलों एवं समुद्रों से घिरे होने के कारण सम्भव हुआ है। चीन में विस्तृत नवीकृत मैदान (हुआंग हो, यांग्त्सी, सीक्यांग) तथा उत्तर-पूर्वी या मंचूरियाई मैदान हैं। इस देश की सबसे बड़ी नदियाँ जिनजियांग (यांग्त्सीक्यांग), सीक्यांग एवं हुआंग हो हैं। ये तीनों नदियाँ पूर्व की ओर बहते हुए प्रशान्त महासागर में गिरती हैं। चीन की ये तीनों मुख्य नदियाँ व उनकी सहायक नदियाँ चीन को उत्तरी चीन, मध्य चीन एवं दक्षिणी चीन में विभक्त करती हैं।

चीन में प्रभावित होने वाली **यांग्त्सी नदी एशिया की सबसे लम्बी नदी** (6300 किमी) है और **विश्व की तीसरी सबसे लम्बी नदी** में शुमार है। यह नदी सीकांग के पहाड़ी क्षेत्र से निकलकर दक्षिण-पश्चिम से होती हुई उत्तर-पूर्व दिशा की ओर बहती हुई पूर्वी चीन सागर में गिरती है। यह नदी अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख (Estuary) बनाती है। यांग्त्सी नदी के विभिन्न हिस्सों में चावल, गेहूँ, जौ, मक्का, अफीम, गन्ना, मटर एवं कपास आदि की खेती की जाती है। अत: कृषि एवं यातायात की सुलभता होने के कारण इस नदी की काफी उपयोगिता है। सबसे उत्तर में बहने वाली **हुआंग हो नदी** का उद्गम स्थल तिब्बत के पठार से निकलकर बोहाई की खाड़ी, पीला सागर में अपना जल गिराती हैं। हुआंग हो नदी चीन में लोयस के मैदान से निकलती है। लोयस के मैदान में पीली मिट्टी पाई जाती है, यही कारण है कि इसे 'पीली नदी' भी कहा जाता है। इस नदी के द्वारा चीन में हर साल बाढ़ आती है जिस कारण इसे 'चीन का शोक', भटकती नदी आदि नामों से सम्बोधि त किया जाता है। हुआंग नदी क्षेत्र विश्व का सबसे बड़ा उपजाऊ क्षेत्र कहलाता है। यह नदी चीन में बहने वाली दूसरी सबसे लम्बी नदी है। हुआंग हो नदी व इसकी सहायक वीहो नदी को **चीनी सभ्यता की जननी** कहा जाता है। **सिक्यांग नदी** युन्नान पठार से निकलकर क्यांसी और क्वांगटुंग क्षेत्रों से प्रवाहित होकर दक्षिणी चीन सागर में गिरती है। इस नदी के तट पर हांगकांग नगर स्थित है। इस प्रकार चीन की भौगोलिक अवस्थिति उसे समाजार्थिक, राजनीतिक क्षेत्रों में सक्षम बनाने के साथ बाह्य आक्रमण से पूर्णतया सुरक्षा प्रदान करती है।

प्रागैतिहासिक काल (PrehistoricAge)

चीन की सभ्यता के परातन अवशेषों को अन्वेषण के माध्यम से ही ज्ञात किया जा सकता है। आधुनिक समय में पुरातत्व प्रमाणों से यह ज्ञात होता है कि पेकिंग के नजदीक झोऊ-कोऊ तिएन गुफा से 'पेकिंग-मानव' के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उसे सम्भवत: 'होमो इरेक्टस' माना गया है। यह चीन पूर्व-पाषाण काल का है। कुछ शोधों से महत्वपूर्ण जानकारी भी प्राप्त हुई है कि पेकिंग मानव आग जलाने की और उसे नियन्त्रित करने की कला जानते थे। वैज्ञानिक कार्बन डेटिंग के अनुसार प्रारम्भिक मनुष्य 22 लाख से 25 लाख वर्ष पहले चीन में रहा करते थे। गुआंगजी के लिऊजियांग क्षेत्र में चीन के आधुनिक मानवों के होने के प्रमाण मिले हैं जिनमें खोपड़ी का एक भाग भी है जो 67,000 वर्ष पुराना है। हालांकि जिऊजियांग से प्राप्त अवशेषों को लेकर थोड़ा विवाद है, फिर भी आधुनिक मनुष्य उस समय से पूर्व चीन पहुँच चुके थे। वीउरनीख द्वारा पेकिंग मानव को मंगोल जाति के अलावा भी चीनी जाति का पूर्वज बताया। अत: यहाँ के निवासी ऐतिहासिक चीनी जाति की भाँति मंगोल परिवार से सम्बन्धित थे। पीकिंग नामक स्थान से मिले मनुष्य की खोपड़ी व दाँत पुरापाषाण काल के हैं। इसके उत्तरोत्तर काल के पाषाण के औजार एवं मृद्भाण्ड पीली नदी (हुआंग हो नदी) क्षेत्र की पहाड़ियों की तलहटी से प्राप्त हुए हैं।

चीन में 12 हजार वर्ष पूर्व आरम्भ हुए नवपाषाण काल के प्रमाण हुआंग हो नदी के मध्य मार्ग में मिले हैं, इससे सम्बन्धित दो महत्वपूर्ण स्थल हैं—होनान एवं शांसी। जे. पी. एण्डर्सन द्वारा होनान के यांगशाओ नामक स्थान से नवपाषाणकालीन संस्कृति का उत्खनन कार्य किया गया। इस स्थल से चित्रित मृद्भाण्ड के महत्वपूर्ण प्रमाण प्राप्त हुए हैं। इसलिए इस स्थल को 'यांगशाओ संस्कृति' नाम से पुकारा गया। शांसी के यानपो स्थल के उत्खनन के बाद वहाँ पर मिट्टी की दीवारों वाले घर एवं लकड़ी के खम्भों के साक्ष्य प्राप्त हुए। फर्श को मिट्टी द्वारा लीपा जाता था। इसके अलावा अलमारियों व चूल्हों के लिए भी मिट्टी का उपयोग किया जाता था। मिट्टी का प्रयोग अनाज रखने के लिए भी किया जाता था। इस काल में मिट्टी के बर्तन लाल एवं भूरी मिट्टी और रेत से निर्मित किये जाते थे। इन पर चित्रकारी करने का भी साक्ष्य मिला है जो काफी सुन्दर और आकर्षित थे। नव-प्रस्तरकालीन संस्कृति से कृषि एवं पशुपालन के प्रमाण मिले हैं। यहाँ गेहूँ और बाजरा की खेती की जाती थी। कृषि के अलावा पशुपालन के रूप में भेड़, बकरी, कुत्ते एवं अन्य पशु को भी पालन के साक्ष्य मिले हैं। इन स्थलों से धनुष कमान व तीर भी मिले हैं जिससे संकेत मिलता है कि इस काल में शिकार करने का चलन था। इस तरह व्यवस्थित कृषि के विकास ने मृद्भाण्ड एवं औजारों सहित विभिन्न सम्बन्धित गतिविधियों में भी सहायता की। पाषाण के टुकड़ों से बने औजार व हथियारों की जगह बेहतर तरीके से तराशे गये उपकरणों ने ले ली।